आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-128/2015-2017
प्रेषण :- कार्यालय शास्त्री सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांकः-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

दैनिक

● मुद्रण तारीख - 04-02-2016 ● अंक-424 ● तारीख - 05 फरवरी 2016, माघ कृष्ण पक्ष - 12 ● शुक्रवार ● उदयपुर ● कुल पृष्ठ-02 ● मूल्य-1 रूपया ● पृष्ठ-01

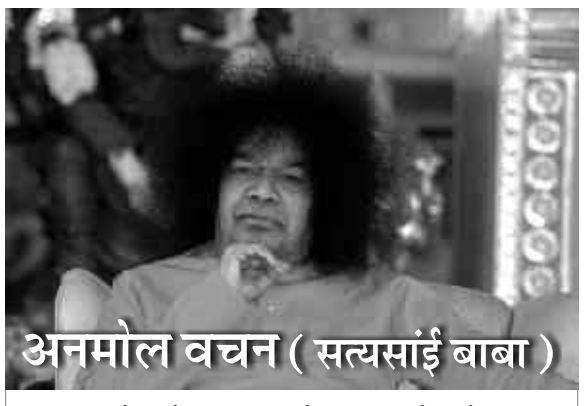

अनमोल वचन (सत्यसांई बाबा)

दूसरों के गुण और अपनो के दोष सदा ढूँढते रहो।

वरदान है तुलसी

- ब्लड–प्रेशर को सामान्य रखने के लिए तुलसी के पत्तों का सेवन करना चाहिए।
- तुलसी के पांच पत्ते और दो काली मिर्च मिलाकर खाने से वात रोग दूर हो जाता है।
- कैंसर रोग में तुलसी के पत्ते चबाकर ऊपर से पानी पीने से काफी लाभ मिलता है।
- तुलसी तथा पान के पत्तों का रस बराबर मात्रा में मिलाकर देने से बच्चों के पेट फूलने का रोग समाप्त हो जाता है।
- तुलसी का तेल विटामिन सी, कैल्शियम और फास्फोरस से भरपूर होता है।
- तुलसी का तेल मक्खी– मच्छरों को भी दूर रखता है।
- बदलते मौसम में चाय बनाते हुए हमेशा तुलसी की कुछ पत्तियां डाल दें। वायरल से बचाव रहेगा।
- शहद में तुलसी की पत्तियों के रस को मिलाकर चाटने से चक्कर आना बंद हो जाता है।
- तुलसी के बीज का चूर्ण दही के साथ लेने से खूनी बवासीर में खून आना बंद हो जाता है।
- तुलसी के बीजों का चूर्ण दूध के साथ लेने से नपुंसकता दूर होती है और यौन–शक्ति में वृध्दि होती है।

ऐसे स्मार्ट बनेगा जयपुर, जानिए क्या होंगी इसकी 5 खूबियां

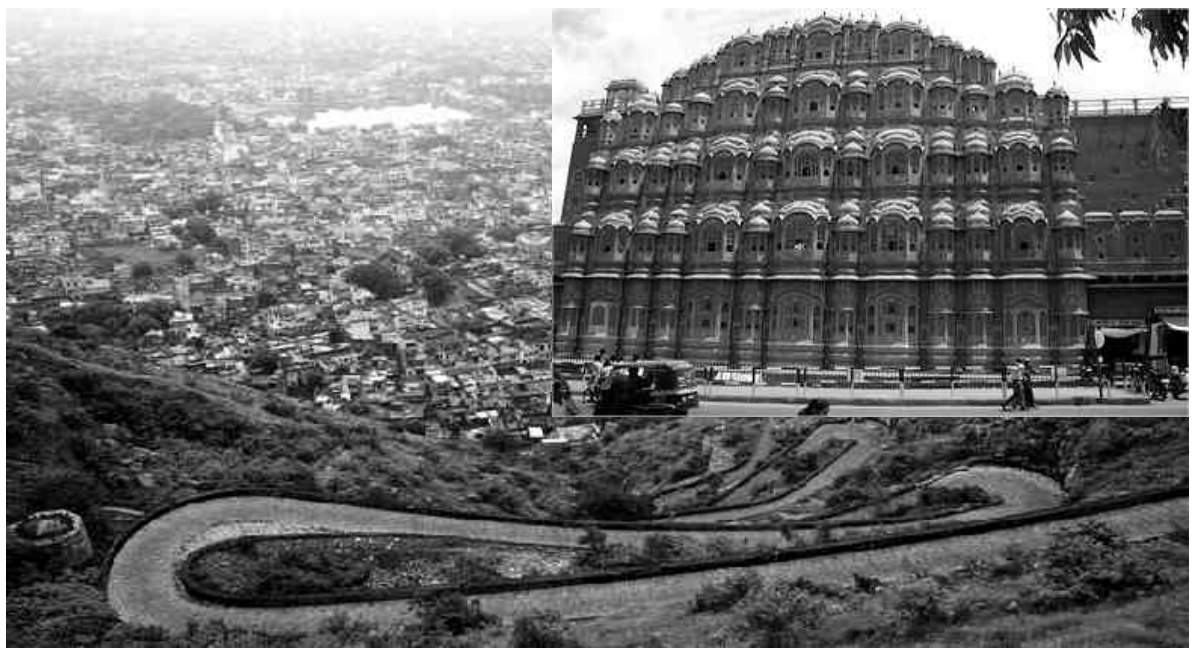

स्मार्ट सिटी के तहत चारदीवारी में 705 एकड़ एरिया में पॉल्यूशन फ्री जोन बनाया जाएगा। इस जोन में पेट्रोल–डीजल के वाहन नहीं चल सकेंगे। सिर्फ इलेक्ट्रिक ईको फ्रेंडली वाहन ही दौड़ सकेंगे।

- पॉल्यूशन फ्री जोन रामनिवास बाग से चौड़ा रास्ता, त्रिपोलिया बाजार, बापू बाजार, जौहरी बाजार, सिरह ड्योढ़ी बाजार, जलेब चौक और जनता मार्केट तक होगा।
- इतना ही नहीं, कई बाजारों में हफ्ते में एक दिन नो व्हीकल डे लागू करने की भी योजना है।
- जयपुर के स्मार्ट बनने की शुरुआत यहीं से होगी।
- पब्लिक ट्रांसपोर्ट इस्तेमाल करने की आदत को बढ़ावा दिया जाएगा।
- इस पॉल्यूशन फ्री जोन में पब्लिक ट्रांसपोर्ट उपलब्ध करवाने की जिम्मेदारी मेट्रो व अन्य निजी कंपनियां निभाएंगी।

ऐसा होगा स्मार्ट जयपुर ये जानिए 5 खूबियां

पार्किंग फ्री बाजार
जौहरी बाजार, चौड़ा रास्ता, बापू बाजार, त्रिपोलिया बाजार के आधे हिस्से व सिरह ड्योढ़ी बाजार में वाहन खड़े नहीं होंगे। रामलीला मैदान में दो मंजिला भूमिगत पार्किंग बनेगी, जिसे रामनिवास बाग की पार्किंग से जोड़ा जाएगा। संजय बाजार में मल्टी स्टोरी पार्किंग, चौगान में भूमिगत पार्किंग के ऊपर खेल मैदान की योजना है।

ऑनलाइन सिस्टम
सफाई की मॉनिटरिंग के लिए बनेगा। मोहल्ला निगरानी समिति बनेगी, निगम वार्ड वाइज वाट्स एप ग्रुप बनाएगा।

आधुनिक बस
शेल्टर बनेंगे। इसमें एलईडी रनिंग लाइटिंग में दिशा सूचक तो होंगे ही। साथ ही इंफॉर्मेशन कियोस्क भी बनाए जाएंगे। ताकि जयपुर आने वाले व्यक्ति को हर जानकारी मिल जाए।

वाई फाई चारदीवारी
स्मार्ट सिटी के लिए जिस सात सौ एकड़ एरिया को विकसित किया जाना है, वह पूरी तरह वाई फाई कनेक्टिविटी वाला होगा। वाई फाई के लिए रोड लाइट के पोल पर एक बॉक्स लगाया जाएगा, जो सर्वर से कनेक्ट होगा। इस बॉक्स में सर्विलांस कैमरा व सीसीटीवी कैमरा भी कनेक्ट होगा। वाई फाई का पासवर्ड टूरिस्ट सेंटर से मिलेगा।

ईको फ्रेंडली होगा ट्रांसपोर्ट
- 705 एकड़ एरिया में बनेगा पॉल्यूशन फ्री जोन
- हफ्ते में एक दिन 'नो व्हीकल डे' की भी तैयारी।

निगम कमिश्नर बोले – टाइमिंग और क्वालिटी पर देंगे जोर

स्मार्ट सिटी पर काम शुरू हो गया है। हम टाइम लाइन व क्वालिटी दोनों पर ध्यान देंगे। सबसे महत्वपूर्ण सिटी को पॉल्यूशन फ्री बनाना है। इसके लिए स्मार्ट सिटी एरिया में आने वाले बाजारों में ईको फ्रेंडली व्हीकल ही चलेंगे। स्मार्ट सिटी बनाने की शुरुआत ही यहीं से होनी है। पहले 705 एकड़ एरिया को लिया जाएगा, उसके बाद चारदीवारी के आसपास के बाजारों में भी यह सिस्टम शुरू किया जाएगा। – **आशुतोष एटी पेंडणेकर, कमिश्नर नगर निगम**

अनुरोध

प्रिय पाठकगण,

''मन के जीते जीत सदा'' समाचार पत्र को दिये गए अपार सहयोग हेतु आपका आभार। हमारा प्रयास सदैव पाठकों को तथ्यपूर्ण एवं रूचिकर सामग्री उपलब्ध कराने का रहा है। इसी क्रम में, यदि आप हमें पठनीय सामग्री संबंधी कोई सुझाव देना चाहें, अपनी स्वरचित कहानी/कविता भेजना चाहें अथवा आपके गाँव/ शहर/राज्य से जुड़ी कोई ऐतिहासिक/ धार्मिक/सांस्कृतिक जानकारी समाचार पत्र में प्रकाशित करवाना चाहें तो संपूर्ण जानकारी फोटो सहित हमें डाक से भेजें या ईमेल करें। अपूर्ण, तथ्यहीन जानकारी प्रकाशित नहीं की जाएगी तथा सामग्री प्रकाशित करने अथवा न करने का अधिकार प्रकाशक मण्डल के अधीन है। धन्यवाद।

पता :- ई-डी-71, बप्पा रावल नगर, सेक्टर - 6
हिरण मगरी, उदयपुर (राज.)
ई-मेल :- mankijeet2015@gmail.com

आत्मानुसंधान का पथ है- आध्यात्मिक

आध्यात्म क्या? अपनी खोज में निकल पड़े मुसाफिर की राह, मंजिल है आध्यात्म। जब लक्ष्य अपनी चेतना का स्रोत समझ आ जाए तो अपने उस, केंद्र की यात्रा है आध्यात्म। थोड़ा एडवेंचर के भाव से कहें तो यह अपनी चेतना के शिखर का आरोहण है। अध्यात्म स्वयं को समग्र रुप से जानने की प्रक्रिया है। विज्ञजनों की बात मानें तो यह जीवन पहेली की मास्टर–की है। आश्चर्य नहीं कि सभी विचारकों – दार्शनिकों – मनीषियों ने चाहे वे पूर्व के रहे हों या पश्चिम के, जीवन के निचोड़ रुप में एक ही बात कही–आत्मानम् विद्, नो दाईसेल्फ, अर्थात पहले, खुद को जानो, स्वयं को पहचानो।

इस तरह अध्यात्म आत्मानुसंधान का पथ है, एक अंतर्यात्रा है। अध्यात्म उस आस्था का नाम है जो जीवन का केंद्र अपने अंदर मानती है और जीवन की हर समस्या का समाधान अपने अस्तित्व के केंद्र में खोजने का प्रयास करती है।

यमुनोत्री धाम

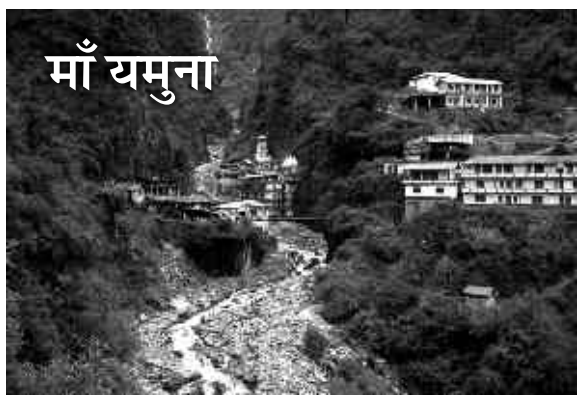

यमुनोत्री चार धामों मे से एक प्रमुख धाम है। यमुनोत्री हिमालय के पश्चिम में ऊँचाई पर स्थित है। यमुनोत्री को सूर्यपुत्री के नाम से भी जाना जाता है। यमुनोत्री से कुछ किलोमीटर की दूरी पर कालिंदी पर्वत स्थित है। जो अधिक ऊँचाई पर होने के कारण दुर्गम स्थल भी है। यही वह स्थान है जहां से यमुना एक संकरी झील रूप में निकलती है। यह यमुना का उद्गम–स्थल माना जाता है। यहां पर यमुना अपने शुरूआती रूप में यानी के शैशव रूप में होती है यहां का जल शुद्ध एवं स्वच्छ तथा सफेद बर्फ की भांति शीतल होता है।

यमुनोत्री मंदिर

यमुनोत्री मंदिर को टिहरी के महाराजा प्रतापशाह ने बनवाया था, मंदिर में काला संगमरमर है। यमुनोत्री मंदिर के कपाट अक्षय तृतीया के पावन पर्व पर खोले जाते हैं व कार्तिक के महीने में यम द्वितीया के दिन बंद कर दिए जाते हैं, सर्दियों के समय यह कपाट बंद हो जाते हैं क्योंकि बर्फ बारी की वजह से यहां पर काम काज ठप हो जाता है, और यात्रा करना मना होता है। शीतकाल के छः महीनों के लिए खरसाली के पंडित मां यमुनोत्री को अपने गांव ले जाते हैं, पूरे विधि विधान के साथ मां यमुनोत्री की पूजा अपने गांव में ही करते हैं. इस मंदिर में गंगा जी की भी मूर्ति सुशोभित है तथा गंगा एवं यमुनोत्री जी दोनों की ही पूजा का विधान है।

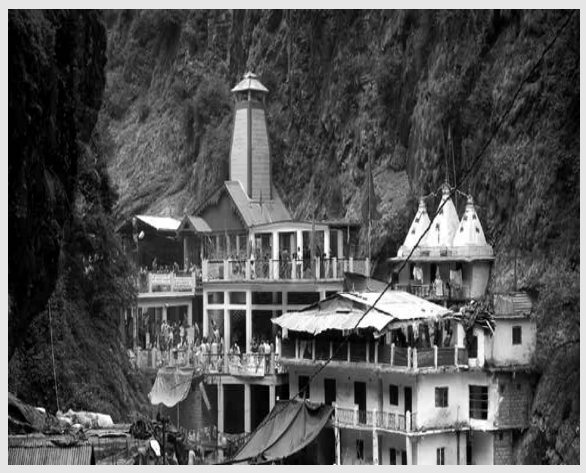

यमुनोत्री मंदिर के प्रांगण में विशाल शिला स्तम्भ खडा है जो दिखने मे बहुत ही अदभुत सा प्रतीत होता है। इसे दिव्यशिला के नाम से जाना जाता है। यमुनोत्री मंदिर बहुत उँचाई पर स्थित है, इसके बावजूद भी यहां पर तीर्थयात्रियों एवं श्रद्धालुओं का अपार समूह देखा जा सकता है। मां यमुना की तीर्थस्थली गढवाल हिमालय के पश्चिमी भाग में यमुना नदी के स्त्रोत पर स्थित है। यमुनोत्री का वास्तविक रूप बर्फ की जमी हुई एक झील हिमनद है। यह समुद्र तल से 4421 मीटर की ऊँचाई पर कालिंद नामक पर्वत पर स्थित है। इस स्थान से आगे जाना संभव नही है, क्योकि यहां का मार्ग अत्यधिक दुर्गम है इसी वजह से देवी यमुनोत्री का मंदिर पहाड़ के तल पर स्थित है। संकरी एवं पतली सी धारा के रूप में युमना जी का जल बहुत ही शीतल, परिशुद्ध एवं पवित्र होता है और मां यमुना के इस रूप को देखकर भक्तों के हृदय में यमुनोत्री के प्रति अगाध श्रद्धा और भक्ति उमड पड़ती है।

यमुनोत्री पौराणिक संदर्भ

यमुनोत्री के बारे मे वेदों, उपनिषदों और विभिन्न पौराणिक आख्यानों में विस्तार से वर्णन किया गया है। देवी के महत्व और उनके प्रताप का उल्लेख प्राप्त होता है। पुराणों में यमुनोत्री के साथ असित ऋषि की कथा जुड़ी हुई है कहा जाता है कि वृद्धावस्था के कारण ऋषि कुण्ड में स्नान करने के लिए नहीं जा सके तो उनकी श्रद्धा देखकर यमुना उनकी कुटिया मे ही प्रकट हो गई. इसी स्थान को यमुनोत्री कहा जाता है। कालिन्द पर्वत से निकलने के कारण इसे कालिन्दी भी कहते हैं.

यमनोत्री धाम कथा –

एक अन्य कथा के अनुसार सूर्य की पत्नी छाया से यमुना व यमराज पैदा हुए। यमुना नदी के रूप मे पृथ्वी मे बहने लगीं और यम को मृत्यु लोक मिला। कहा जाता है कि जो भी कोई यमुना के जल में स्नान करता है, वह अकाल मृत्यु के भय से मुक्त होता है और मोक्ष को प्राप्त करता है। किदवंति है कि यमुना ने अपने भाई से भाईदूज के अवसर पर वरदान मांगा कि इस दिन जो यमुना स्नान करे, उसे यमलोक न जाना पड़े। अतः इस दिन यमुना तट पर यम की पूजा करने का विधान भी है।

गतांक से आगे ...

मानव मन के बोल

वो तीन दिन लोहिया जी के साथ...

कितना कष्ट होता है? कहा कैलाश जी कितनी मेहनत करती है। लेकिन दुःखी की दुःखी ही है। बोले अपने उनके हाथ देखें होंगे। जो हाथ कोमल होने चाहिए थे, वो हाथ कितने कठोर हैं, उनमें छाले पड़ गये। भाग्य की रेखाएँ जैसे कष्टों ने बिगाड़ दी। उन्हीं दिनों में वनवासी क्षेत्रों में जाने का अवसर मिला था। ऊंची–ऊंची पहाड़ियाँ, दुर्गम रास्ते, एक छोटा सा झोपड़ा, उस झोपड़े में एक बकरी बंधी हुई है। एक–दो मुर्गे और छोटी सी कोठी जो खाली पड़ी है।

डॉ. लोहिया जी की आँखों में आँसू देखे। उन्होंने कहा कैलाश जी स्थितियों में असमानता बहुत है। कहीं करोड़ों रूपये के बंगले हैं 22–23 मंजिल के, 12–12 गाडियाँ बाहर खड़ी हैं। बाथरूम के नलों में चाँदी लगी है, कहीं नलों में सोने की पॉलिश की हुई है। मैंने भी देखा अपनी आँखों से बॉम्बे में। तो डॉ. राममनोहर लोहिया जी ने कहा कैलाश जी मुझे रात को कई बार नींद नहीं आती है। सोचता हूँ, ये समस्या कैसे दूर हो? इसलिए मैं प्रधानमंत्री नेहरू जी से प्रश्न करता हूँ और वो समाधान है भारत सरकार के पास। कठोर कानून से याद आया। मुझे उस समय मेरे मुँह से निकल गया था। मैं गया एक राजा के पास में। आदरणीय डॉ. लोहिया साहब एक गरीब भिखारी गया कपड़े फटे हुए थे। तीन दिन से भूखा था। .....

क्रमश अगले अंक में ...

सम्पादकीय

मनुष्य बहुत कुछ कामनाएँ रखता है। यह चाहिए, वह चाहिए पर जो कुछ वह चाहता है, उसमें से कितना पूरा होता है? शायद नहीं के बराबर। जो चाहें सो पाएं, वाली बात इसी कारण आश्चर्यजनक लग सकती है। भला यह कैसे संभव है? हम जो चाहें सो पाएँ–कैसे हो सकता है? अधिकांश इस पर विश्वास ही न करें, पर दुनिया के एक नहीं लाखों दृष्टांत इस बात के प्रमाण हैं कि जो चाहा, सो पाया..... आखिर कैसे ?

कोई चमत्कार या जादू के बल पर नहीं, वरन् अपने अन्तःकरण की शक्ति के बल पर पाया। भाग्य या अवसर की प्रतीक्षा करने वाले लोगों को चिंतकों और मानव ज्ञान शास्त्रियों ने निकम्मा और मूर्ख माना है। भाग्य और अवसर नाम की कोई चीज नहीं होती है। 'जब भाग्य होगा अपने आप काम हो जाएगा' या अभी अवसर कहाँ आया है'।

अवसर आते ही सारा काम बन जाता है। इस तरह की भावनाएँ केवल अपनी असफलता पर परदा डालने की कोशिश है। इस तरह हम अपनी कमजोरियाँ छिपाते हैं। वास्तव में भाग्य और अवसर नाम की कोई चीज नहीं है। यह केवल मन का वहम मात्र है। कोई भी कार्य करने का अवसर या भाग्य देखना निहायत बेतुकी बात है। जो कर्मयोगी हैं, वह कभी इसकी प्रतीक्षा नहीं करते। धन कुबेर रॉकफैलर का कथन था, 'मैंने कभी भाग्य और अवसर की प्रतीक्षा नहीं की, जब भी काम की बात मन में आई, शुरु कर दिया। मैंने अपने जीवन में प्रत्येक क्षण को ही भाग्य और अवसर माना है।' अतएव भाग्य या अवसर की प्रतीक्षा करना अपनी सफलता को पीछे फेंक देना है। हो सकता है कि जब तक इतना समय निकल जाए कि आप करने पर भी न पा सकें। यदा–कदा भाग्य के फेर में भी मनुष्य अपने जीवन को दुःख से भर लेता है। अतएव भाग्य या अवसर की प्रतीक्षा न कर आप अपना कार्य शुरू कर दें। दूसरों को देखें – लोग उनकी प्रशंसा करते हैं–'कितना भाग्यशाली है अमुक, 'अमुक का सितारा बड़ा बुलंद है' –पर क्या 'अमुक' के जीवन में झांकने की कोशिश की कि 'अमुक' आज जिस शिखर पर है, उस तक पहुंचने के लिए 'अमुक' ने कितना कठोर परिश्रम किया है? अमुक ने क्या–क्या संकट नहीं बर्दाश्त किए? यह तो 'अमुक' का दिल जानता होगा कि वह कैसे उस स्थान तक आया है? दूसरों का सुख, वैभव देखकर आपको ईर्ष्या होती है, पर उस सुख को भोगने वाले दिलों से पूछिए कि कैसे पाया है यह सब ?..... और अपने आपको बनाए रखने के लिए उनको अभी भी क्या–क्या करना पड़ रहा है ? अतएव जब तक आप इस महत्व को नहीं जानेंगे और केवल 'अवसर', 'भाग्य' की राह देखते रहेंगे, तब तक आप कुछ नहीं कर सकते हैं।

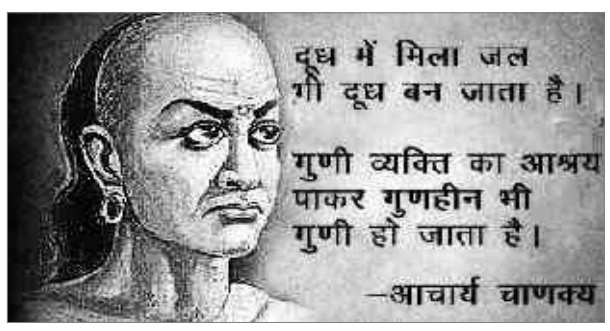

101 निःशक्त एवं निर्धन जोड़ो का निःशुल्क विवाह समारोह

''नई दिल्ली के पंजाबी बाग में सम्पन हुई हल्दी–मेहंदी की रस्म'' | **''समाजसेवियों'' को सेवा–रत्न अवार्ड''**

नारायण सेवा संस्थान उदयपुर (राजस्थान) के तत्वावधान में नई दिल्ली के पंजाबी बाग स्थित जन्माष्टमी पार्क में दो दिवसीय 25 वॉ निर्धन एवं दिव्यांग(निःशक्त) युवक –युवतियों का निःशुल्क सामूहिक विवाह समारोह संस्थान संस्थापक पद्मश्री कैलाश 'मानव', सहसंस्थापिका कमला देवी अग्रवाल एवं संत समुदाय के सानिध्य में विनायक पूजा के साथ आरंभ हुआ। प्रातः 10:15 बजे हल्दी एवं उसके बाद मेहंदी की रस्म सम्पन्न हुई। इसके पश्चात् विवाह समारोह में भाग लेने आए देश–विदेश के अतिथियों का सम्मान किया गया एवं समाज सेवा कार्यों के लिए 'सेवा–रत्न' अवार्ड प्रदान किया गया। कार्यक्रम में गुजरात के कलाकारों ने भक्ति परक सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी। समारोह के विशिष्ठ अतिथि श्रीमद् भागवताचार्य श्री संजय कृष्ण 'सलिल' महाराज, रमेश गोयल, श्रीमती प्रेम निजावन नई दिल्ली, के.सी. भटनागर कनाडा, लता बेन लन्दन थे।

संस्थान अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने संत–समुदाय, अतिथियों व विवाह सूत्र में बंधने वाले जोड़ों का स्वागत करते हुए संस्थान की स्थापना से अब तक की सेवा यात्रा पर प्रकाश डालते हुए बताया कि अब तक 2 लाख 65 हजार निःशक्तजन के निःशुल्क पोलियों करेक्शन ऑपरेशन और 1100 निःशक्तजन के विवाह करवाकर उनकी खुशहाल गृहस्थी सुनिश्चित की गई है। उन्होंने निःशक्त, निराश्रित, मूकबधिर, प्रज्ञाचक्षु व विमंदित बच्चों की शिक्षा के लिए किए गए प्रयासों की भी जानकारी दी। संस्थान संस्थापक पद्मश्री कैलाश 'मानव' ने कहा कि संस्थान जो भी सेवाऐं दे रहा है, वह प्रभु की कृपा और संवेदनशील सहयोगियों से ही संभव हो पा रहा हैं। मनुष्य जीवन तभी सार्थक है, जब हम औरों के दर्द को अपना लें। कार्यक्रम में संत रामकृष्ण जी महाराज, सुनील जी कौशिक, मनीष भाई ओझा व साध्वी ऋचाश्री ने भी आशीर्वाद प्रदान किया। संस्थान निदेशक वन्दना अग्रवाल, ट्रस्टी जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा, ने भी सम्बोधित किया। संचालन महिम जैन ने किया। उल्लेखनीय है कि समारोह पाण्डाल में अस्थि रोग विशेषज्ञ डॉ. ए.एस. चुण्डावत उदयपुर का विशेष सम्मान किया गया, जिन्होंने अब तक 50 हजार निःशक्तजन की सर्जरी की हैं। दिल्ली और आसपास क्षेत्रों से आए निःशक्तजन की जॉच कर ऑपरेशन योग्य का चयन भी किया गया। निःशक्तों के लिए कैलीपर वर्कशॉप लगाई गई।

रोचक जानकारीयाँ

- दिसम्बर 1911 में जब अंग्रेजों ने अपनी राजधानी को कलकत्ता (वर्तमान कोलकाता) से दिल्ली स्थानान्तरित किया तो उन्होंने दिल्ली से लगा हुआ "नई दिल्ली" नामक एक नया शहर बनाने का निश्चय किया। "नई दिल्ली" नामक इस नये शहर का बनना 1931 में पूर्ण हुआ और इसी कारण से पहले से बसा हुआ शहर दिल्ली के स्थान पर "पुरानी दिल्ली" कहलाने लगा।
- 1947 में जब भारत को स्वतंत्रता मिली तो "नई दिल्ली" को पूर्ण स्वतंत्रता न देकर सीमित स्वतंत्रता दी गई थी।
- 1956 में दिल्ली केन्द्रशासित प्रदेश बना।
- दिल्ली का कुतुब मीनार प्रस्तर निर्मित संसार की सबसे बड़ी मीनार है।
- दिल्ली में स्थित खारी बावली एशिया का सबसे बड़ा मसालों का थोक बाजार है।

शीतलता देने वाले – भगवान शीतलनाथ जी

नवम तीर्थन्कर के निर्वाण के सुदीर्घ काल के पश्चात दसवें तीर्थंकर श्री शीतलनाथ जी का जन्म हुआ । भदिदलपुर नरेश दृढरथ एवम् महारानी नन्दादेवी ने प्रभु के जनक –जननी होने का सौभाग्य पाया । माघ कृष्ण द्वादशी के दिन प्रभु का जन्म हुआ । प्रभु जब मात्रगर्भ में थे , तब किसी समय महाराज दृढरथ को दाहज्वर हुआ था । उनकी देह ताप से जलने लगी थी, समस्त उपचार विफल हो गए । तब महारानी के कर –स्पर्श मात्र से महाराज दाहज्वर से मुक्त हो गए थे । महाराज ने इसे अपनी भावी सन्तान का ही पुण्य –प्रभाव माना । फलतः पुत्र के नामकरण के प्रसंग पर उक्त घट्ना का वर्णन करते हुए महाराज ने अपने पुत्र का नाम शीतलनाथ रखा ।

युवावस्था मे कई राजकान्याओं से शीतलनाथ जी का पाणिग्रहण हुआ । पिता द्वारा दीक्षा लेने पर उन्होने राजपद पर आरुढ हो अनेक वर्षों तक प्रजा का पुत्रवत पालन किया । भोगावली कर्म जब समाप्त हो गए , तब माघक्रष्णा द्वादशी के दिन शीतलनाथ ने श्रामणी दीक्षा अन्गीकार की। तप और ध्यान की तीन मास की स्वल्पावधि में ही प्रभु ने चारों घन घाती कर्मो को अशेष कर केवलज्ञान, केवलदर्शन प्राप्त किया । देवो और मानवों ने मिलकर प्रभु का कैवल्य महोत्सव आयोजित किया। प्रभु ने उपस्थित विशाल परिषद् के समक्ष धर्म –देशना दी। अनेक लोगों ने सर्वविरति एवम् अनेकों ने देशविरति धर्म अंगीकार किया । इस प्रकार चतुर्विध तीर्थ की स्थापना की । भगवान के आनन्द आदि इक्यासी गणधर हुए । भगवान के धर्म परिवार में एक लाख साधु , एक लाख छ्ह हजार साध्वियाँ , दो लाख नवासी हजार श्रावक एवम् चार लाख अठानवे हजार श्राविकाएँ थी। लम्बे समय तक विश्वकल्याण का अलख जगाते हुए, प्रभु शीतलनाथ इस भूतल पर विचरण करते रहे । बाद मे वैशाख क्रष्णा द्वितीया को सम्मेद शिखर से नश्वर देह का विसर्जन कर मोक्ष पधारे।

भगवान के चिन्ह का महत्व वत्स –भगवान शीतलनाथ के चरणों का यह चिन्ह सभी महापुरूषों ने अपने वक्षस्थल पर धारण किया है। श्री. वत्स का अर्थ होता है –लक्ष्मी पुत्र, श्री (लक्ष्मी) , वत्स (पुत्र) , किन्तु वास्तव में जिन महापुरूषों के वक्षस्थल पर श्रीवत्स होता है वे लक्ष्मी –पुत्र न होकर धर्म –पुत्र होते हैं । संसार के समस्त सुख –ऐश्वर्य तो उनके दास होते हैं । लक्ष्मी उनकी दासी होती है । श्रीवत्स को क्षमा और धैर्य का प्रतीक भी बताया गया है । इस गुण को धारण करने वाला ही महापुरूष बनता है । अष्ट मंगल में श्रीवत्स भी एक मंगल है । जिसके ह्रदय पर श्रीवत्स होता है वह संसार का मंगल –कल्याण करता है ।

मुख्य कार्यकारी अधिकारी–कैलाश 'मानव'
मार्गदर्शक–प्रशान्त अग्रवाल,
जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा
मार्गदर्शिका–कमलादेवी, वन्दना अग्रवाल
सहायक प्रबन्धक–मोहन लाल गाडरी
संपादक–लक्ष्मीलाल गाडरी
संपादन सहयोगी–घनश्याम सिंह राठौड़

मुद्रक–न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, प्रकाशक–कमलादेवी, मुद्रण स्थल–13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, सिरण मगरी, सेक्टर–3 उदयपुर (राज.), प्रकाशन स्थल– ई–डी–71 बप्पा रावल नगर, सिरण मगरी, सेक्टर–6, उदयपुर (राज.)
सम्पादक–लक्ष्मीलाल गाडरी, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2014/59353 टेलिफोन नं. – 0294–6622222 मो.–09587720000,09928022275,09214657807,09785039524 www.mannkijeet.com, mankijeet2015@gmail.com